[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3431

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत में शास्त्रीय प्रयोग : आसावरी थाट के संदर्भ में

डॉ रूपाली जैन
अतिथि विद्वान
भगतसिंह शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जावरा, रतलाम (मध्य प्रदेश)

फिल्म संगीत का आरंभ हमें बोलती फिल्मों के आगमन से ही मानना चाहिए। मूक फिल्मों के दौर में बड़े शहरों में स्क्रीन के पास एक ऑरकेस्ट्रा रहा करता था, जो परदे पर चल रही कहानी के बदलते भावों के अनुकूल संगीत बजाया करता था, पर बोलती फ़िल्मों के साथ गीत–संगीत भी फ़िल्म का अंतरंग हिस्सा बनकर आए और संगीतकार की भी एक अलग पहचान बनी। अतः प्रथम सिने संगीत और उसका संगीतकार हम 14 मार्च, 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में रिलीज प्रथम बोलती फिल्म ''आलमआरा'' के संगीतकार फिरोज शाह मिस्त्री को ही मानेंगे तथा पहला सिने गीत ''दे दे खुदा के नाम पे प्यारे'', ताकत है गर देने की, कुछ चाहे तो अगर माँग ले मुझसे, हिम्मत हो गर लेने की '' को मानेंगे। इस गीत के गायक इसी फिल्म के अभिनेता डब्ल्यू.एम. खान थे, जिन्होंने इसे फ़कीर के किरदार में गाया था। इस गीत को मात्र तबले और एक हारमोनियम के साथ सृजित किया गया था, किंतु दुर्भाग्यवश इसका रिकार्ड नहीं बन सका, फिल्म में रागों पर आधारित गीतों का चलन भी इसी फिल्म से आया, जिसमें मुन्नी बाई का गाया, ''अपने मौला की मैं जोगन बनूँगी '', यह गीत राग ''भैरवी'' पर आधारित था।

आरंभिक फिल्म संगीत का चरित्र कथानक के रूप में हुआ करता था जिसे आगे बढ़ाने के लिए गीतों की सहायता ली जाती थी, साथ ही विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिए भी सिनेगीत ही उपयुक्त माने जाते थे। सिनेगीत गीत में शब्दों के बोलों के द्वारा कथ्य एवं भावाभिव्यक्ति पर अधिक ज़ोर दिया जाता था, वाद्ययंत्रों में अक्सर हारमोनियम, तबला, वॉयलिन या अधिक से अधिक ढोलक एवं बाँसुरी से काम चल जाता था।

आरंभकाल में सिने संगीत में पार्श्वगायन की पद्धति नहीं थी इसलिए नायक तथा नायिका अपने गीत स्वयं गाते थे, चूँकि नायक नायिका कोई बहुत कुषल गाने वाले भी नहीं होते थे, अतः गीत की स्वर–रचना भी बहुत जटिल नहीं रहती थी। अक्सर धीमी लय के गीत ही सृजित किए जाते थे। आरंभिक संगीतकारों के संगीत में कुछ संगीतकारों में लोक–धुनों से प्रेरित होकर कुछ गीत उनके मूल रूप में ही फिल्मों में लिए गए। शास्त्रीय संगीत के इतिहास के अनुसार शास्त्रीय संगीत का जन्म लोक संगीत से माना जाता है। अतः कुछ संगीतकारों ने राग–रागिनियों के शुद्ध रूप में भी गीतों को कंपोज किया। रागों को तोड़ने–मरोड़ने की प्रवृत्ति प्रारंभिक काल में कम थी। शायद इसीलिए चौथे और पाँचवे दषक के आरंभिक वर्षों के सिने संगीत में मिठास और कोमलता के लिए रागों में छेड़छाड़ न करने के कारण मेलोडी का वह आकर्षक रूप कम मिलता है जो अगले दो दशकों में आया।

शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता कुछ संगीतकारों ने सुन्दर शास्त्रीय बंदिशों को भी फिल्मों में जगह दी। प्रसिद्ध अभिनेत्री नरगिस की माँ, जद्दनबाई न सिर्फ कुशल गायिका थीं, बल्कि उन्होंने अपनी निर्मित फिल्म ''तलाश–ए–हक़ '' (1935) में संगीत देकर फिल्म जगत की पहली महिला संगीतकार होने का भी गौरव प्राप्त किया। इस फिल्म में शास्त्रीय मिश्रित ठुमरी की शैली में ''घोर, घोर, घोर, घोर बरसत मेंहरवा'' को फिल्माया। इसी दषक में फिल्म '' हृदयमंथन '' (1936) के राग ''गुणकली'' पर आधारित गीत ''डमरू हर कर बाजे '' में ध्रुपद शैली का उपयोग किया गया।

इस तरह सिने संगीत के प्रारंभ काल से ही शास्त्रीय संगीत का आविर्भाव सिने संगीत में हमें देखने को मिलता है। सिने संगीत की बढ़ती लोकप्रियता ने शास्त्रीय गायकों को भी अपनी और आकर्षित किया जिसमें संगीत में दक्ष हीराबाई बड़ोदेकर ने (1937) ''प्रतिभा'' फिल्म में सर्वप्रथम तीन गीत गाये थे। शास्त्रीय संगीत को सरस गीतों में ढालने का श्रेय चौथे दशक के बाद कुछ संगीतकारों को जाता है, जिनमें व्ही.शांताराम, पंकज मलिक, कानन देवी, नौषाद, एस.डी.बर्मन, के.सी. डे, आर.सी. बोराल, एस.एन.त्रिपाठी, रविशंकर, अली अक़बर, जयदेव, लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल, शिव–हरि तथा शास्त्रीय संगीत में नौशाद, खैय्याम, सलिल चौधरी, एस.डी.बर्मन, अनिल बिस्वास, मदनमोहन, हेमंत कुमार, ओ.पी.नैय्यर, सी. रामचंद्र, शंकर–जयकिशन, रवि, दत्ताराम, कल्याणजी–आनंदजी, आर.डी.बर्मन, इस्माईल दरबार।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

इन विभूतियों ने शास्त्रीय संगीत के अस्तित्व को कायम रखने के लिए विभिन्न रागों पर आधारित जो कर्णप्रिय गीत समाज को दिए, वह सदैव सिने जगत् में गूँजते रहेंगे। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा निर्मित शास्त्रीय संगीत की थाट व्यवस्था में 10 थाटों का उल्लेख है, उपरोक्त संगीतकारों ने दसों थाटों में कर्णप्रिय गीतों की मधुर रचनाएँ सृजित की जिनमें कल्याण, भैरवी, आसावरी एवं तोड़ीथाट का बाहुल्य दिखाई देता है। इन थाटों में सबसे प्रभावषाली गीत आसावरी थाट तथा उसके आसपास के स्वरों पर आधारित रहे हैं, जिनकी सूची निम्नानुसार हैः–

राग ''जौनपुरी'' पर आधारित फिल्मी गीत ''अजनबी तुम जाने पहचाने से लगते हो '' फिल्म ''हम सब उस्ताद हैं'' । इसे सुश्री लता मंगेशकर जी ने गाया है। राग जौनपुरी के स्वर –

आरोह – सा रे म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा

राग ''सिंधु भैरवी'' पर आधारित गीत ''अजहूँ न आए बालमा'' फिल्म ''साँझ और सवेरा'' से है। इसे मोहम्मद रफी और सुमन कल्याणपुर ने गाया है।

जौनपुरी	गीत	गायक	फिल्म
	जब दिल को सातवे ग़म	लता एवं साथी	सरगम
	तराना–दीन तदीम	लता मंगेशकर	शिवभक्त

राग सिंधु भैरवी के स्वर – आरोह – सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा

सिंधु भैरवी	फिल्म	गायक	गीत
	लाट साहब	मोहम्मद रफी एवं साथी	सबेरे वाली गाड़ी से
	अनारकली	लता मंगेशकर	''ये जिंदगी उसी की है''
	मुक्ति	मुकेश	''सुहानी चाँदनी रातें''
	आँधी	लता मंगेशकर–किशोर कुमार	''तुम आ गये हो''

राग ''देसी'' पर आधारित गीत ''आज गावत मन मेरो झूम के'' फिल्म ''बैजू बावरा'' से है। इसे उस्ताद अमीर खाँ एवं पं.वी. पलुस्कर जी ने गाया है।

अड़ाणा	गीत	गायक	फिल्म
	''कल नहीं पाये जिया''	लता मंगेशकर	छोटी से मुलाकात
मिश्र अड़ाणा	''आज क्यूँ हमसे परदा है''	रफी, बलबीर	साधना
अड़ाणा	''झनक–झनक पायल बाजे''	उस्ताद मीर खाँ	झनक–झनक पायल बाजे

राग दरवारी कान्हड़ा के स्वर –

आरोह – नि सा रे ग रे सा, म प ध नि सां
अवरोह – सां ध नि प म प ग म रे सा

राग ''दरबारी कान्हड़ा'' पर आधारित गीत

गीत	गायक	फिल्म
उड़ जा भँवर	मन्ना डे	रानी रूपमती
ओ दुनिया के रखवाले	मोहम्मद रफी	बैजू बावरा
कोई मतवाला आया मेरे	लता मंगेशकर	लव–इन–टोकिया
घूँघट के पट खोल रे	गीता रॉय	जोगन
झनक झनक तोरी बाजे पायलिया	मन्ना डे	मेरे हुजूर
तुमसे ही घर–घर कहलाया	मुकेश	भाभी की चूडियाँ
तोरा मन दरपन कहलाए	आशा भोंसले	काजल
दैय्या रे दैय्या लाज	आशा भोंसले	लीडर

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

दिल जलता है तो	मुकेश	पहली नज़र
मुहब्बत की झूठी कहानी	लता मंगेशकर	मुगले आज़म
मुझे तुमसे कुछ भी न	मुकेश	कन्हैया
सरफरोशी की तमन्ना	मोहम्मद रफ़ी,मन्नाडे	शहीद
हम तुमसे मोहब्बत करके सनम	मुकेश	आवारा
रहा गर्दिषें में हर दम	मोहम्मद रफी	दो बदन
चाँदी की दीवार न तोड़ी	मुकेश	विश्वास

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख्याल आधारित कुछ गीत भिन्न–भिन्न रागों में कंपोज किए गए, जिनमें ''गरजत बरसत सावन आयो रे'' राग गौड मल्हार, ''बोले रे पपीहरा'' राग मियाँमल्हार इत्यादि अनेक प्रकार रागाधारित गीतों की धुनें फिल्माई गई। आसावरी थाट में भी कई कठिन धुनों को कंपोज किया गया। जिनमें से एक ''झनक झनक पायल बाजे'' की स्वर–लिपि निम्नानुसार हैः–

राग–अड़ाणा
गायक – उस्ताद अमीर खाँ एवं साथी
फिल्म – झनक झनक पायल बाजे
संगीत निर्देशक – वसंत देसाई
स्थायी – झनक झनक पायल बाजे, पायलिया की रूनक झुनक पर, छम–छम मनवा नाचे।
अंतरा – नील गगन भी सुनकर झूमे मधुर–मधुर झनकार, मधुर मधुर झनकार।
सोई धरती जाग उठी है – 2, गूँज उठा संसार, राग रंग भी साजे ।।

स्वर लिपि (स्थाई)

						प	रें	सां	रें	नि	सां	नि	म	प	सां
						झ	न	क	झ	न	क	पा	–	य	ल
सां	सां	ध	नि	प	प	प	रें	सां	रें	नि	सां	नि	म	प	सां
बा	–	–	–	जे	–	झ	न	क	झ	न	क	पा	–	य	ल
x				2				0				3			
सां	सां	ध	नि	प	–	–	–	म	म	प	प	निप	मप	सां	–
बा	–	–	–	जे	–	–	–	पा	–	य	ल	या–	––	की	–
ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	–	म	म	प	प	ध	ध	नि	नि
रू	न	क	झु	न	क	प	र	छ	म	छ	म	म	न	वा	–
x				2				0				3			
निनि	पम	पनि	सारें	नि	सां										
ना–	––	––	––	चे	–										

अंतरा

								म	म	प	प	ध	ध	नि	नि
								नी	–	ल	ग	ग	न	भी	–
नि	नि	नि	निध	नि	सां	सां	सां	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि
सु	न	क	र–	झू	–	मे	–	म	धु	र	म	धु	र	झ	न
x															
सां	–	रेंसां	नि	–	–	सारें	सां	नि	नि	नि	नि	सां	नि	सारें	सां

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

का	–	––	–	–	–	––	र	म	धु	र	म	धु	र	झ–	न
x				2				0				3			
ध्	ध्	नि	–	प	–	–	–	प	सां	सां	रें	नि	सां	नि	प
का	–	–	–	–	–	र	–	सो	–	ई	–	ध	र	ती	–
x															
पनि	सारें	गं	मं	रें	रें	सा	–	नि	नि	नि	नि	सां	नि	रें	सां
जा–	––	–ग	उ	ठी	–	है	–	गूं	–	ज	उ	ठा	–	सं	–
x				2				0				3			
ध्	–	नि	–	प	–	–	–	म	–	म	प	–	प	ध्	–
सा	–	–	–	–	–	र	–	रा	–	ग	रं	–	ग	भी	–
x															
निनि	पम	पनि	सारे	नि	सां										
सा–	–	–	–	जे	–										

सिने संगीत के आरंभकाल से ही शास्त्रीय संगीत का बाहुल्य सिने जगत पर अपनी अमिट छाप छोड़ता आया है। सिने तारिकाओं पर नृत्याधारित कई गीत फिल्माए गए। जिनमें शास्त्रीय संगीत के वाद्य तथा रागों का प्रचुर मात्रा में उपयोग दिखाई देता है, शास्त्रीय संगीत के महानायकों पर भी चित्रपट बनाए गए, जिनमें संगीत सम्राट तानसेन, बैजू बावरा, स्वामी हरिदास इनका जीवन्त चित्रण किया गया है। आसावरी थाट के रागों के कई प्रभावशाली गीत आज भी सिने जगत में अपनी शास्त्रीयता का गौरव बरकरार रखे हुए हैं तथा आने वाले समय में इस राग की रंजकता का एवं मधुरता का प्रयोग नवोदित संगीतकार सफलतापूर्वक करेंगे, ऐसी आशा है।

संदर्भ –

1– धुनों की मात्रा, पंकज राग राजकमल प्रकाशन वर्ष 2006 पृ. 11, 12, 13
2– राग विशारद भाग 2 डॉ लक्ष्मी नारायण गर्ग संगीत कार्यालय, हाथरस वर्ष 1999